फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 199 जनवरी 2005

कहत कबीर

क्षणिक, सतही, छिछले सम्बन्ध मनोरोगों का आधार हैं, मन की बीमारियाँ लिये हैं।

मसला यह व्यवस्था है (6)

इस-उस नीति, इस-उस पार्टी, यह अथवा वह लीडर की बातें शब्द-जाल हैं, शब्द-आडम्बर हैं

★ राजे-रजवाड़ों के दौर में, बेगार-प्रथा के दौर में मण्डी-मुद्रा का प्रसार कोढ में खाज समान था। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के इंग्लैण्ड-वेल्स-स्कॉटलैण्ड-आयरलैण्ड में भेड़ों ने, भेड़-पालन ने मनुष्यों को जमीनों से खदेड़ा। कैदखानों में जबरन काम करवाने, दागने, फाँसी देने के संग-संग बेघरबार किये गये लोगों को दोहन-शोषण के लिये दूरदराज अमरीका-आस्ट्रेलिया जैसे स्थानों पर जबरन ले जाया गया। उन स्थानों के निवासियों के लिये तो जैसे शामत ही आ गई हो। गुलामी जिनकी समझ से बाहर की चीज थी उन अमरीकावासियों के कत्लेआम किये गये। अफ्रीका से गुलाम बना कर लोगों को अमरीकी महाद्वीपों में काम में जोता गया। ★ फैक्ट्री-पद्धति ने मण्डी-मुद्रा के ताण्डव को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली फैक्ट्री-पद्धति को भाप-कोयले ने, भाप-कोयला आधारित मशीनरी ने स्थापित किया। इसके संग दस्तकारी और किसानी की मौत, दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत आरम्भ हुई। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के कारखानों में 6-7 वर्ष के बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम में जोता गया और ... और बेरोजगार बने-बनते लाखों लोगों के लिये अनजाने, दूरदराज स्थानों को पलायन मजबूरी बने। ★ फ्रान्स-जर्मनी-इटली ... में फैक्ट्री-पद्धति के प्रसार के संग वहाँ भी आरम्भ हुई दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत लाखों को मजदूर बनाने के संग-संग यूरोप से बड़े पैमाने पर लोगों को खदेड़ना भी लिये थी। अमरीका... आस्ट्रेलिया... लोगों से "भर गये"। ★ बिजली ने रात को भी काम के लिये खोल दिया। फैक्ट्री-पद्धति ने हमारी नींद ही नहीं उड़ाई बल्कि मारामारी का वह अखाड़ा भी रचा कि 1914-19 के दौरान ढाई करोड़ लोग और 1939-45 के दौरान पाँच करोड़ लोग तो युद्धों में ही मारे गये। ★ अब फैक्ट्री-पद्धति में यह इलेक्ट्रोनिक्स का दौर है। फैक्ट्री-पद्धति का प्रसार पृथ्वी के कौने-कौने में और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। इस दौर में एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत तीव्र गति से हो रही है। भारत के, चीन के करोड़ों तबाह दस्तकार-किसान कहाँ जायें? इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा दुनियाँ-भर में बेरोजगार कर दिये गये, बेरोजगार किये जा रहे करोड़ों मजदूर कहाँ जायें?

विद्यालय-शिक्षा की बुनियादी इकाइयाँ **अक्षर व अंक** लिखित आदान-प्रदानों के आधार व जरिये ही नहीं है बल्कि एकरूपता-स्टैन्डर्डाइजेशन-मानकीकरण के माध्यम के रूप में यह व्यक्ति को संकीर्ण व्यवहार में धकेलने और व्यवस्था की निरंकुशता के साधन भी हैं। औजार सहायक की बजाय अभिशाप बन गया है। अक्षर-अंक का व्यापक प्रसार, विद्यालयों का पृथ्वी-व्यापी जाल मण्डी के विस्तार के संग-संग चला है। अक्षर-अंक और मण्डी एक-दूसरे के पूरक-से साबित हुये हैं। ऐसे में आइये अक्षर-अंक को कुछ और कुरेद कर देखें।

– अक्षर-अंक के निश्चित रूप। इन रूपों की पहचान और प्रयोग। अक्षर व अंक के नियम-उपनियम। यह स्वयं में अनुशासन लिये हैं। अनुशासन अपने में संकीर्ण व्यवहार लिये है। अनुशासन साहबों का, प्रबन्धकों का प्रिय शब्द है।

– निश्चित रूप, एकरूपता, स्टैन्डर्डाइजेशन अक्षर-अंक की ही तरह प्रोडक्ट और उत्पादन-प्रक्रिया में क्षेत्र व उद्योग विशेष से आरम्भ हो कर सर्वत्र व सार्विक बन, विश्व स्टैन्डर्ड बन कर सम्पूर्ण पृथ्वी पर मजदूरों/मनुष्यों को निश्चित आकार-प्रकार के पुर्जों में बदलने को अग्रसर है। दस्तकार की मनमर्जी पर रोक, कुशल मजदूर की मर्जी पर पाबन्दी वास्तव में व्यक्ति/व्यक्तित्व के लिये स्थान सिकोड़ना है। व्यक्ति/व्यक्तित्व के महत्व का विलोप...

– "निरंकुशता का अन्त" इतिहास के पाठ के तौर पर पढाया जाता है। राजा-बादशाहों की मनमर्जी के किस्से और उन पर लगाम के लिये नियमों-कानूनों के महत्व की बातें की जाती हैं। व्यक्ति की निरंकुशता को नियमों-कानूनों के तानों-बानों में जकड़ कर समाप्त कर दिया गया.... विद्यालयों के "सर्व शिक्षा अभियानों" द्वारा अक्षर-अंक की पहचान-प्रयोग में सब को खींच लेना प्रत्येक को क्रेता-विक्रेता में तब्दील करने, हरेक को बेचने-खरीदने वाले में बदल देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मण्डी के नियम-कानून "व्यक्ति की निरंकुशता का अन्त" और ... और समाज व्यवस्था की निरंकुशता लिये हैं। सामाजिक प्रक्रिया की निरंकुशता ने जगन्नाथ के रथ को बहुत बौना बना दिया है।

ऊँच-नीच। आधुनिक ऊँच-नीच। अखाड़ा-मण्डी। विश्व मण्डी। होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन का सर्वग्रासी अभियान। स्वयं मनुष्यों का मण्डी में माल बन जाना। यह है वर्तमान समाज व्यवस्था।

– अक्षर व अंक की जुगलबन्दी व्यक्ति को समाज की इकाई के तौर पर स्थापित करने में उल्लेखनीय रोल अदा करती है। विद्यालय में रोल नम्बर, उपस्थित/अनुपस्थित की दैनिक क्रिया मण्डी-मुद्रा-फैक्ट्री पद्धति की व्यक्ति को अपनी आधारभूत इकाई स्थापित करने की प्रक्रिया को पुष्ट करती है। उत्पादन और वितरण में व्यक्ति का इकाई बनना प्रत्येक का अक्षर-अंक से परिचित होना तो अनिवार्य बनाता ही है, यह व्यक्ति को महिमामंडित भी करता है। पुरुषों के संग महिलाओं को नौकरी-चाकरी में धकेलने के लिये सिद्धान्त की चाशनी भी....

– समुदाय के टूटने पर उभरी ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में आमतौर पर पुरुष-केन्द्रित परिवार उनकी इकाई बने। विश्व मण्डी की स्थापना के आरम्भिक दौर में, निजी व परिवार के श्रम द्वारा मण्डी के लिये उत्पादन वाले सरल माल उत्पादन में भी परिवार प्राथमिक इकाई बना रहा। फैक्ट्री-पद्धति, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली वर्तमान समाज व्यवस्था परिवार को छिन्न-भिन्न कर व्यक्ति को ऊँच-नीच का एक स्तम्भ बनाने को अग्रसर है। संयुक्त परिवार का विलोप-सा हो गया है। पति-पत्नी-बच्चे वाले परिवार लड़खड़ा रहे हैं, टूट रहे हैं....

– व्यक्ति/व्यक्तित्व को एक तरफ गौण-दर-गौण बनाती और दूसरी तरफ व्यक्ति का महत्व स्थापित करती वर्तमान समाज व्यवस्था वास्तव में गौण को महत्वपूर्ण बना रही है। छवि की महामारी..... नये समुदाय आधारित समाज रचना के प्रयासों के लिये यह एक पुकार भी है।

नीति, पार्टी, नेता बदलने से इस सब में कोई फर्क पड़ेगा क्या? (जारी)

खतों-पत्रों से

✱ मेरी आयु 46 वर्ष है। मैं एक पूर्व कैदी हूँ। मैंने जेल में बी.ए.की उपाधि पायी। हाल ही में एम.ए. (हिन्दी) भी पास किया हूँ। ... क्रान्तिकारी लेखन में गहरी रुचि रखता हूँ... अब राज्य में जो शाँति वार्ता चल रही है वह केवल स्वार्थपरक बुद्धि की उपज है। इससे जनता का कुछ भी भला होने वाला नहीं है। डूबनेवाले को तिनके का सहारा कब तक साथ देगा? इसीलिये नक्सल को चाहिये कि वार्ता से दूर रहे तथा आन्दोलन जारी रखे।

मैं डॉ. बी.आर. आम्बेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय में विगत 15 साल से दैनिक वेतन पर कार्यरत हूँ। मुझे 176 रुपये प्रतिदिन के रूप में मिलते हैं। मेरी दो सन्तान हैं....

बचपन में ही माता- पिता का साया उठ गया। बचपन काँटों के रास्ते गुजर गया। दुःख एवं ऑसू मेरे हमसफर बने। अन्याय- अत्याचार सह न सका। एक व्यक्ति का मेरे हाथों खून हुआ। सच्चाई का गला दबा कर पुलिस ने गलत मामला बनाया। अदालत में मुकदमा चला। मुझे अदालत पर गुस्सा आया। मैंने जज को चप्पल से मारा, अदालत का बहिष्कार किया। मुझे मौत की सजा सुनाई गई। उच्च न्यायालय ने उसे आजीवन कारावास में बदल दिया। जेल में बी.ए. के बाद मर्सी पर रिहा हुआ। ...

इस व्यवस्था को बारीकी से देखता हूँ। गुस्सा आता है। .... पत्नी- बच्चे याद आते हैं.... परन्तु मन को शांति तथा सन्तुष्टि नहीं मिल रही। समाज के लिये बहुत कुछ करने की लालसा है।...

हाल ही में एक स्थानीय दैनिक में पार्ट- टाइम काम भी शुरू किया है। रात के एक- दो बज जाते हैं।....

— राजन्ना, हैदराबाद

✱ कैसे पनपे शाँति
इस धरा की कोख से?
वर्चस्व की होड में
बो रहे हों लोग जब
हथियारों के हलों से
बारूद क बीज
धरा की गोद में।

—पुष्पेन्द्र, बर्नपुर

✱.... प्रतिक्रियाओं के लिये पूरा पन्ना नहीं तो दो कॉलम तो जरूर रखें।.... लेखक होने के नाते (मैंने 1961 से 2001 तक प्रेस में कंपोजिंग — पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेजी— की है, बाइंडिंग की, प्रिन्टिंग मशीन पर हैल्पर भी रहा) मैं आपका उद्देश्य नहीं समझ सका पत्रिका चलाने का, पाठक क्या समझेंगे? पत्रिका में कोई बात गलत नहीं होती परन्तु पाठकों की डाक/ लेखकों की बातें/रचनायें/ सुझावों/विचारों....

आतंकवादी

जालंधर- अमृतसर मुख्य मार्ग पर दो व्यक्तियों ने एक कैंटर को रोका। ड्राइवर से पता नहीं क्या बात हुई — उसने न में सिर हिलाया। गाड़ी स्टार्ट करके चल पड़ा। उन दोनों व्यक्तियों ने मोटर साइकिल पर ड्राइवर का पीछा करके उसे रोक लिया। बाहर सड़क पर खींच कर खूब पिटाई की। एक उच्च अधिकारी का निजी सामान ले जाने से इनकार किया था ड्राइवर ने। पिटाई करने वालों में एक था थाना प्रभारी और दूसरा कमीना था स्थानीय अदालत में जज का रीडर।

— धर्म सिंह, संगरूर

✱ लूटपाट करने वालों की चाँदी है
बदमाशों का मेला, दुःख की कमी नहीं।
मक्कारों की कमी कहाँ है यहाँ- वहाँ
इनमें भी ठेलमठेला, दुःख की कमी नहीं।
इंसानियत चीखती है पर सब बहरे ज्यों
भाग्य चलाता ढेला, दुःख की कमी नहीं।

—स्वर्णकिरण, नालन्दा

✱... मसला यह व्यवस्था है लेकिन इससे भी बड़ा प्रश्न है : व्यवस्था बनती कैसे है? इसका दृष्टि और मूल्य से भी गहरा रिश्ता है। इसलिये मेरे जेहन में ये सवाल उठ रहे हैं कि मसला व्यवस्था से ज्यादा सभ्यतागत मूल्य दृष्टि है।...

— भवेश असगर, होशंगाबाद

✱.... रेल विभाग से रिटायर होने के बाद मैंने 'अखिल हिन्दुस्तान भ्रष्टाचार निरोधक संघ' की स्थापना की। भाजपा, काँग्रेस, राजसत्ता के अधिकारियों के भ्रष्टाचार की चर्चायें अस्पताल परिसर, न्यायालय, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, बाग- बगीचे, धार्मिक- सामाजिक स्थानों पर रोजाना शुरू की। बात- बात में झगड़ भी पड़ते।

रेलवे से रिटायर होने के बाद मैंने एक टापरा बनाया और इसमें ऊपर का कमरा किराये पर दे दिया। भाजपा व काँग्रेस कार्यकर्ताओं की शह पर युवा किरायेदार दम्पति ने 8 अक्टूबर को मेरे ऊपर हमला किया। मेरी उम्र 70 साल और पत्नी की 68 है। मेरा हाथ टूटा और पत्नी के चोटें आई। छह दिन सरकारी अस्पताल में पत्नी और मैं भर्ती रहे — डॉक्टरों पर नेताओं- पुलिस ने दबाव डाल कर हमें अस्पताल से भगाया। हम जब अस्पताल में थे तब किरायेदार मकान खाली कर गये। और.... पुलिस ने हम पर धारा 341, 323, 324,354 लगा कर बन्द कर दिया— जमानत होने पर पत्नी और मुझे छोड़ा ! टोकने पर पुलिसवाले बोले कि हम तो सरकार के गुलाम हैं — अगर विधायक/सांसद यह कहे कि मुर्दा मुर्दा नहीं है तो हम भी कहेंगे हाँ सा मुर्दा उठ कर भाग गया।.

आजादी नहीं, हो रही है बरबादी
भगवा, तिलक, मुल्ला, पादरी और खादी।
दोगली, खोखली सरकार कुर्ता खादी का
कर दिया सामान सब बरबादी का।

— तुलसी राम, कोटा

और बातें यह भी

जगसनपाल फार्मास्युटिकल्स मजदूर : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी 04 से देय डी.ए. नहीं दिया। इधर जुलाई से देय डी.ए. के पैसे भी कम्पनी नहीं दे रही। पूछने पर साहब कहते हैं कि सूचना आई ही नहीं है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद—121001

न्यूनतम से कम वेतन

हरियाणा में सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर—हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी पर 87 रुपये 16 पैसे और महीने में 4 छुट्टी पर 2269 रुपये 45 पैसे। यह कम से कम तनखायें हैं और 1 जुलाई से लागू हैं। वैसे मुख्यमंत्री ने 25 सितम्बर को कम से कम मजदूरी 100 रुपये प्रतिदिन करने की घोषणा की थी — आदेशों का दिसम्बर—अंत तक भी इन्तजार है। दिल्ली में हैल्पर का न्यूनतम वेतन 2863 रुपये है।

एस.जे.इंजिनियर्स, 352 सै- 24, में हैल्परों को 1600 रुपये तनखा; **निधि इन्टरप्राइज**, 85 सै- 6, में हैल्पर की तनखा 1500 रुपये, पहली शिफ्ट 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, 200 मजदूरों में 15- 20 को ई.एस.आई. कार्ड; **आर.के. टूल्स**, 25 सै- 4, में हैल्परों को 1500 रुपये तनखा, 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से; **ग्लोब कैपेसिटर**, 22 बी तथा 30/8 इन्ड. एरिया, में 10 घण्टे के 75 रुपये और रविवार की भी छुट्टी नहीं; **आर.एस. ऑटो**, 25 सै- 25, में ठेकेदार बन कम्पनी अधिकारी 1500 रुपये तनखा देता है, अन्य हैल्परों को 1800- 1900 रुपये; **चन्दा इन्टरप्राइज**, मुजेसर, में हैल्पर को 1450 रुपये तनखा; **जयको स्टील फासनर्स**, 269 सै- 24, में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 1400 रुपये तनखा; **सांई प्रिन्स पैक**, 196 संजय कॉलोनी सै- 23, में हैल्पर को 1500 रुपये और ऑपरेटर को 2000- 2100 रुपये तनखा; **राजू इंजिनियरिंग**, 22ए इन्ड. एरिया, में हैल्पर की तनखा 1500 रुपये, 12 घण्टे की एक शिफ्ट और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; **महावीर डाइकास्टिंग**, 272- 73 सै- 24, में हैल्परों की तनखा 1500- 1800 रुपये, 12½ घण्टे की ड्युटी और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; **हैमर फोर्ज**, 28 सै- 6, में हैल्पर की तनखा 1600 रुपये, रोज 10 घण्टे काम, 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; **न्यू प्रगति उद्योग**, 30- 31 संजय कॉलोनी सै- 23, में हैल्परों की तनखा 1500- 1700 रुपये,.

नहीं दी तनखा

अगस्त का वेतन कानून अनुसार 7 दिसम्बर से पहले 1000 से कम मजदूरों वाली फैक्ट्रियों में देना था।

सी.एम.आई., 71 सै- 6, में सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें 16 दिसम्बर तक नहीं दी थी; **ब्रॉन लैबोरेट्री**, 13 इन्ड. एरिया, में कैजुअल व ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर तक नहीं, **क्लच आटो**, 12/4 मथुरा रोड़, में अक्टूबर की तनखा 30 नवम्बर तक जा कर पूरी दी और नवम्बर का वेतन 15 दिसम्बर तक कुछ मजदूरों को ही; **एस.पी.एल.**, 20- 21 व 39 व 48 सै- 6, में नवम्बर की तनखा 14 दिसम्बर तक नहीं, 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को साप्ताहिक छुट्टी नहीं; **महावीर इलेक्ट्रिकल्स**, 2392 सै- 7, में अक्टूबर की तनखा 30 नवम्बर को दी और नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर तक नहीं; **इन्जेक्टो**, 20/4 मथुरा रोड़, में 5 महीनों की तनखायें बकाया हो गई हैं; **श्याम टैक्स इन्टरनेशनल**, 4 सै- 6, में नवम्बर की तनखा अधिकतर मजदूरों को 16 दिसम्बर तक नहीं, 12- 12 घण्टे की शिफ्ट, तनखा 1642 रुपये महीना जिसमें ओवर टाइम मिलाने पर 2400 रुपये, ठेकेदारों के जरिये भर्ती को साप्ताहिक छुट्टी नहीं, फैक्ट्री में 3000 से अधिक मजदूर, ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. की पर्ची नहीं।

अनुभव-विचार-अनुभव

इन्डो ब्रिटिश गारमेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 48 डी.एल.एफ. एस्टेट स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की हड़ताल दिवाली पर खत्म की गई। दो महीने चली हड़ताल के दौरान पुलिस संरक्षण में नये भर्ती व पुराने कैजुअलों को फैक्ट्री में ले जा कर मैनेजमेन्ट ने उत्पादन कार्य जारी रखा। हड़ताल के दौरान 30 स्थाई मजदूर हिसाब ले गये और यूनियन लीडरों ने 10 नवम्बर को मैनेजमेन्ट से किये समझौते में हम मजदूरों का बेड़ा ही गर्क कर दिया। समझौते में 14 स्थाई मजदूरों को बाहर किया है। फैक्ट्री के अन्दर गये स्थाई मजदूरों को परेशान करने में कम्पनी कोई कमी नहीं छोड़ रही – सर्दी में सुबह 6 बजे और रात 10 बजे से शिफ्ट आरम्भ की हैं।"

बोनी रबड़ वरकर : "प्लॉट 9 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 30-35 स्थाई, 60-70 कैजुअल और ठेकेदार के जरिये रखे 7-8 वरकर काम करते हैं जिनमें कुछ तो बच्चे हैं। बच्चों को 1200 रुपये महीना तनखा और हैल्परों को 1600 ठेकेदार के जरिये दी जाती है। कैजुअल वरकरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक भी छुट्टी नहीं – रविवार को 8 घण्टे काम। गाडियों के रबड़ के पार्ट्स बनते हैं, बहुत गन्दा काम है – बिना नहाये फैक्ट्री से नहीं निकल सकते, ऐसे हो जाते हैं कि पहचान में नहीं आते। स्थाई मजदूर को कम्पनी महीने में एक किलो साबुन देती है पर इससे पूरा नहीं पड़ता जबकि कैजुअल वरकर को साबुन देती ही नहीं। ई.एस. आई. कार्ड किसी कैजुअल वरकर को नहीं दिया है। तीन महीने कम्पनी कैजुअल वरकर का पी.एफ. काटती है और तीन महीने नहीं काटती जबकि वह उस दौरान भी फैक्ट्री में काम करता होता है।"

आकाश हाइटेक इन्डस्ट्रीज मजदूर : "3 ई - 18 बी.पी. स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को 1500 रुपये महीना तनखा देते हैं। फैक्ट्री में 80-90 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-7 के ही हैं। रबड़ विभाग में रोज 2 घण्टे ओवर टाइम काम होता है और सी.एन.सी. विभाग में 4 घण्टे – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चेयरमैन- मैनेजिंग डायरेक्टर श्याम सुन्दर कपूर मजदूरों को गाली देता है, थप्पड़ भी मार देता है।"

निर्माण इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 145 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दो प्लान्ट हैं – एक में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और दूसरे में 8-10-12 घण्टे की एक शिफ्ट। ओवर टाइम काम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों को 1500-1600 रुपये महीना तनखा – साप्ताहिक छुट्टी किसी को देते हैं, किसी को नहीं देते। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। अक्टूबर की तनखा पहली दिसम्बर को जा कर दी – नवम्बर की आज 11 दिसम्बर तक नहीं दी है। जुलाई से देय डी.ए. के पैसे नहीं दिये हैं। बोनस नहीं दिया है। फैक्ट्री में साइकिल की तिल्ली बनती हैं और तार पतला करते हैं – आँख में, पेट में तार घुस जाता है। कम्पनी एक्सीडेन्ट के लिये मजदूरों को जिम्मेदार ठहराती है और गलती निकाल कर हाजरी काट लेती है।"

सेक्युरिटी गार्ड : "लघु सचिवालय पथ पर सैक्टर-11 में कार्यालय वाली **हिन्दुस्तान सेक्युरिटी (एच आई एण्ड एस एस)** गार्डों से रोज 12 घण्टे, महीने के तीसों दिन ड्युटी करवाती है और बदले में 2500 रुपये महीना देती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। नवम्बर माह के पैसे आज 16 दिसम्बर तक नहीं दिये हैं। पैसे माँगने पर अधिकारी बदतमीजी से पेश आते हैं।"

कलसन आटोमोटिव्ज मजदूर : "प्लॉट 136 डी.एल.एफ. एस्टेट स्थित फैक्ट्री में काम नहीं है कह कर मैनेजमेन्ट ने मार्च 04 में 8 स्थाई मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया और फिर उनकी जगह कैजुअल वरकर भर्ती कर लिये। कम्पनी द्वारा हमारे एतराज नजरअन्दाज करने पर हम स्थाई मजदूरों ने 23 मार्च से हड़ताल कर दी। कम्पनी ने फैक्ट्री गेट पर पुलिस बैठा दी और ठेकेदार टाइगर सेक्युरिटी के जरिये वरकर रख कर फैक्ट्री में उत्पादन जारी रखने के प्रयास किये। हम हड़ताल पर डटे रहे और लगता है कि कम्पनी को उत्पादन में दिक्कतें रही। ऐसे में 9 नवम्बर को मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौता हुआ : 46 स्थाई मजदूरों में से 29 को ड्युटी पर लिया गया और बाकी केस लड़ेंगे। कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये रखे सब वरकर बाहर निकाल दिये और कैजुअलों में से भी आधे बाहर कर दिये – हम स्थाई मजदूरों ने 16 नवम्बर को फैक्ट्री में कार्य आरम्भ किया। मैनेजमेन्ट- यूनियन दीर्घकालीन समझौते (03 के) के अनुसार निर्धारित उत्पादन हम दे रहे हैं पर मैनेजमेन्ट 20 प्रतिशत अतिरिक्त उत्पादन यह कह कर माँग रही है कि इतना कैजुअल वरकर दे रहे हैं। कम्पनी ने हड़ताल के 8 महीने के कोई पैसे हमें नहीं दिये हैं। कम्पनी कैजुअलों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देती है और हम स्थाई को ओवर टाइम का भुगतान मात्र बेसिक का दुगना कर – डी.ए. नहीं जोड़ती – वास्तव में रेट को सिंगल ही कर देती है।"

श्री इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 102 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम तो साफ है पर मेहनत जबरदस्त है – वरकर कम ही टिकते हैं। तनखा मात्र 1400-1500 रुपये महीना। ड्युटी 12 घण्टे की और इस दौरान कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती। ओवर टाइम के पैसे सिंगल दर से। कार्य करते समय तबीयत खराब होने पर छुट्टी नहीं देते। मैनेजर को घोटाला करने पर – कम्पनी को हर महीने 3 लाख रुपये का चूना लगाने पर अक्टूबर में निकाल दिया। नया मैनेजर भी कोई कम नहीं है – वह मजदूरों से 2244 पर हस्ताक्षर करवाता है और देता 1500 रुपये है। एक अन्य साहब हाजरी/ओवर टाइम में गड़बड़ करके हमारी मजदूरी में से खाता है। कम्पनी ने दिवाली पर उपहार में आधा किलो सड़े लड्डू दिये – बोनस नहीं दिया।"

बेलमेक्स मजदूर : "प्लॉट 125 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में एक शिफ्ट है – 12 घण्टे की, रविवार को भी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 100 स्थाई, 150 कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे 50 वरकर काम करते हैं। ई.एस. आई., पी. एफ. और सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन स्थाई मजदूरों को ही। कैजुअल वरकर की भर्ती के समय 1425 रुपये महीना तनखा लगाते हैं। भर्ती पर कोई फार्म नहीं भरते, वैसे ही काम पर लगा देते हैं, वैसे ही पावर प्रेस पर लगा देते हैं – उँगलियाँ कटती हैं, हाथ कटते हैं और प्रायवेट इलाज करवा कर निकाल देते हैं। कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय तक नहीं देती। दूर-दूर से वरकर आते हैं और दो मिनट की देरी पर वापस कर कहते हैं कि हाफ डे में आओ।"

शिवालिक ग्लोबल वरकर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर की तनखा 30 नवम्बर को जा कर दी। नवम्बर **(बाकी पेज चार पर)**

मितासो

मितासो एपलाइन्सेज मजदूर : "प्लॉट 63 सैक्टर-6 और प्लॉट 102 सैक्टर-24 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 1997 में 246 स्थाई मजदूर थे जिनमें से आज 67 ही बचे हैं। झटके से छँटनी करने की बजाय यूनियन के सहयोग से दो-दो, तीन-तीन करके इस-उस बहाने से निकाला गया है। यूनियन को प्रति स्थाई मजदूर के हिसाब से कमीशन दिया जा रहा है। बड़े साहब कहते हैं कि स्थाई मजदूर क्यों रखें? जब 1500 में काम करवा सकते हैं, ज्यादा काम करवा सकते हैं तब 6-7 हजार तनखा क्यों दें? ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों के अलावा मितासो में दो प्रकार के कैजुअल हैं – साप्ताहिक छुट्टी वाले और बिना साप्ताहिक छुट्टी वाले।

"सैक्टर-24 फैक्ट्री में शाम 5 से रात 1 बजे की शिफ्ट में कैजुअल ही हैं, ठेकेदारों के जरिये रखे सुबह 8½ से रात 9 बजे तक काम करते हैं जिनमें हैल्परों को 1500-1800 रुपये और ऑपरेटरों को 1800-2000 रुपये तनखा है – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूरों को जनवरी 04 से देय वेतन वृद्धि नहीं दी। जनवरी व फिर जुलाई 04 में देय डी.ए. के पैसे कम्पनी ने नहीं दिये। स्थाई मजदूरों ने 11 सितम्बर को टूल डाउन किया तब मैनेजमेन्ट ने पुलिस बुलाने की धमकी दी और यूनियन चेयरमैन को बुला लिया। मजदूरों ने यूनियन चेयरमैन की एक नहीं सुनी तब कम्पनी ने गेहूँ अलाउन्स के 2500 रुपये दे कर मामला ठण्डा किया था। यूनियन चेयरमैन को हटा कर दूसरे नेताओं से जुड़ने पर नवम्बर-आरम्भ में कम्पनी ने 5 स्थाई मजदूर निलम्बित कर दिये। विरोध में अब 28 दिसम्बर से टूल डाउन किया है।

"मितासो की सैक्टर-6 फैक्ट्री में 12½ घण्टे की एक शिफ्ट है – ओवर टाइम स्थाई को 1½ तथा कैजुअल व ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को सिंगल रेट से। हाथ धोने का साबुन प्रतिमाह स्थाई को 1 किलो, कैजुअल को ½ किलो और ठेकेदार के जरिये रखे को शून्य किलो। स्थाई व कैजुअलों को नवम्बर की तनखा 18 दिसम्बर को दी। ठेकेदारों के जरिये रखों को तनखा तीन किस्तों में देते हैं और नवम्बर की तनखा की पहली किस्त ही दिसम्बर-अन्त तक दी थी। ई.एस.आई. व पी.एफ. स्थाई मजदूरों के ही हैं। बरसों से काम कर रहे कैजुअल व ठेकेदारों के वरकर हैं – मजदूरों के हाथ, उँगलियाँ कटते रहते हैं और प्रायवेट में थोड़ा इलाज करवा कर उन्हें बिना कुछ दिये निकाल देते हैं।"

दिल्ली से-

एक्स एल आर्थोमेड मजदूर : "ई-25 बी-1 मोहन कोऑपरेटिव एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री में अगस्त 04 के आरम्भ में ड्युटी 10 घण्टे कर दी – पहले 8 घण्टे की ड्युटी और 2 घण्टे तो ओवर टाइम होता ही था व ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से करते थे। ड्युटी 10 घण्टे कर ओवर टाइम सिंगल रेट से करने की कम्पनी की योजना का मैंने विरोध किया। इस पर मैनेजमेन्ट ने 10 अगस्त का मुझे फैक्ट्री से निकाल दिया। मैंने खानपुर के पास पुष्पा भवन, पुष्प विहार स्थित दिल्ली सरकार के श्रम विभाग में शिकायत की। चार महीने श्रम निरीक्षक मुझ से चक्कर कटवाता रहा – कभी कहता ड्युटी पर रखवा दूँगा, कभी कहता हिसाब ले लो, कभी कहता केस कर दो। मैं ड्युटी पर रखवाये जाने और कम्पनी के खिलाफ कानून अनुसार कार्रवाई के लिये कहता रहा। कई बार लेबर इन्सपैक्टर ने मुझे फैक्ट्री गेट पहुँच कर इन्तजार करने को कहा पर साहब स्वयं पहुँचते ही नहीं थे। मेरी शिकायत जस की तस रही और नवम्बर-अन्त में उस श्रम निरीक्षक का स्थानान्तरण हो गया। तब मैं श्रीमान ए.एल. सी. से मिला – साहब ने तारीखें दी पर कम्पनी उपस्थित ही नहीं हुई। ऐसे में 20 दिसम्बर को मैं श्रीमान डी.एल.सी. से मिला – साहब ने 22 की तारीख दी। कम्पनी उपस्थित हुई। डी.एल.सी., कम्पनी प्रतिनिधि और मेरे हस्ताक्षर वाला पत्र तैयार किया गया जिसमें 23 दिसम्बर से मुझे ड्युटी पर लेने की बात लिखित में दर्ज थी। मैं 23 दिसम्बर को सुबह ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचा तो मैनेजमेन्ट ने मुझे ड्युटी पर लेने से साफ-साफ इनकार कर दिया। इस पर मैं श्रीमान डी.एल.सी. के पास गया तो साहब बोले कि वो कुछ नहीं कर सकते। ऐसे में मैंने दिल्ली सरकार के श्रम आयुक्त के 5, शामनाथ मार्ग (निकट कश्मीरी गेट) दफ्तर में दस्तक दी है।"

हचिसन एस्सार टेलिकाम वरकर : "सी-48 ओखला फेज–2 में 24 घण्टे काम होता है। कम्पनी ने स्वयं 400 मजदूर भर्ती किये हैं और 5-6 ठेकेदारों के जरिये 600 को रखा है। ठेकेदार नाम बदलते रहते हैं – बोनस 12 महीने की बजाय 8 महीने का देते हैं।"

अनुभव-विचार-अनुभव..... (पेज तीन का शेष)

का वेतन आज 15 दिसम्बर तक नहीं दिया है। हर रोज 12 घण्टे काम के बदले कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये को महीने में 2500 रुपये और ठेकेदार के जरिये रखे को 2100 रुपये। फूट डालने के लिये मैनेजमेन्ट कुछ मजदूरों को 2700-2800 रुपये महीना भी देती है। बरसों से काम कर रहा कोई मजदूर ई.एस.आई. कार्ड माँगता है तो परसनल मैनेजर उसे नौकरी से निकाल देता है। परसनल मैनेजर गालियाँ बहुत देता है और उसके पास वरकर कोई समस्या ले कर जाता है तब तमीज से बात नहीं करता।"

सुपर आटो इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 9 जे सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों को अक्टूबर की तनखा 20 नवम्बर को जा कर दी थी और नवम्बर माह का वेतन आज 14 दिसम्बर तक नहीं दिया है। हम में से हैल्परों को 1500 रुपये और ऑपरेटरों को 2000 रुपये महीना तनखा देते हैं। हम में से किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं – जल जाने, कट जाने पर प्रायवेट इलाज करवाते हैं। ड्युटी 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

नीरो प्लास्टिक वरकर : "प्लॉट 307 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्परों को 1700 रुपये महीना तनखा – ऑपरेटर कोई है ही नहीं, हैल्परों से ही मशीनें चलवाते हैं। फैक्ट्री में 25-30 मजदूर काम करते हैं पर रजिस्टर में 4-5 के नाम ही दर्ज हैं और इन्हीं की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं – मैनेजिंग डायरेक्टर का नाम भी इन 4-5 में है।"

न्यू एलनबरी वर्क्स मजदूर : "14/7 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में 1 मई को मैनेजमेन्ट ने शर्तों पर हस्ताक्षर को फैक्ट्री में प्रवेश की शर्त बनाया। यूनियन ने कहा कि शर्तों पर दस्तखत मत करो। फैक्ट्री के 261 स्थाई मजदूरों में से 226 ने हस्ताक्षर नहीं किये और फैक्ट्री से बाहर रहे। पुलिस की मदद से कम्पनी ने 150 स्टाफ सदस्यों, 35 स्थाई मजदूरों, ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकरों, 100 पुराने व 200 नये भर्ती कैजुअलों के जरिये उत्पादन जारी रखा।

"यूनियन ने लंगर चलाने की बात की थी – लंगर नहीं चलाया। यूनियन 60 सांसदों और केन्द्र सरकार की कुंजी हाथ में होने की बात करती थी – आठ महीनों में 2 सांसद आये और एस.पी., डी. एल.सी. से मिल कर आश्वासन दे कर चले गये। केन्द्रीय श्रम मन्त्री का फोन करना फोन ही रहा। हमारा सहकर्मी जिसने घर-घर जा कर यूनियन फार्म भरवाये थे और जिसे 2500 रुपये महीना भत्ता (कम्पनी द्वारा नौकरी से नवम्बर 03 में निकाल दिये जाने पर), मोबाइल का खर्चा, आने-जाने का खर्चा हम स्थाई मजदूरों द्वारा एकत्र पैसों से दिया जा रहा था वह महासचिव अक्टूबर में गुपचुप कम्पनी से हिसाब ले गया। उससे पहले उप-प्रधान भी गुपचुप हिसाब ले गया।

"बड़े ट्रेड यूनियन लीडरों ने टालमटोल बढा दी। ऐसे में फैक्ट्री के बाकी यूनियन नेता मुख्य मन्त्री से मिले, स्थानीय काँग्रेस सांसद से मिले, मेयर से ... कम्पनी ने पुलिस और श्रम विभाग के 5 रिटायर अधिकारी भर्ती कर सरकारी विभागों को बखूबी साधा है।

"अप्रैल में किये काम की तनखा कम्पनी ने हमें नहीं दी है और दिसम्बर-अन्त में हालात यह बनी है: 42 स्थाई मजदूर कम्पनी की शर्तों पर दस्तखत कर फैक्ट्री में हैं, 25 हिसाब ले गये, 90 को कम्पनी ने बरखास्त कर दिया है और 104 को कह रही है कि शर्तों पर हस्ताक्षर कर ड्युटी पर आ जाओ। हम फँस गये हैं, कम्पनी और यूनियन ने हमें फँसा दिया है। निकलें कैसे?"

सस्ते हैं हाथ

अनुभवी पावर प्रेस मैकेनिक : "फरीदाबाद में औसतन हर रोज पावर प्रेसों में 10 मजदूरों की उँगलियाँ कटती हैं।

"पावर प्रेसों में 80 प्रतिशत एक्सीडेन्ट ओपन डाई लगाने के कारण होते हैं। ओपन डाई मैकेनिकल पावर प्रेस में लगायें चाहे न्यूमैटिक में – एक्सीडेन्ट होना ही है। ओपन डाई खर्चा बचाने के लिये लगाते हैं – बन्द डाई की कीमत ओपन डाई की कीमत से ढाई गुणा ज्यादा।

"ओपन डाई खुली होती है और हाथ से कम्पोनेन्ट डाई के अन्दर रखना तथा बाहर निकालना पड़ता है। ऐसे में प्रेस जब डबल आ जाती है तब हाथ कट जाता है। थके होने पर ध्यान नहीं रहने के कारण हाथ ज्यादा कटते हैं – फरीदाबाद में ज्यादातर जगह रोज 12 घण्टे तो काम करना ही पड़ता है जबकि पावर प्रेस पर 8 घण्टे ही ज्यादा होते हैं।

"मैकेनिकल प्रेस की तुलना में न्यूमैटिक प्रेस में डबल आने की सम्भावना काफी कम होती है पर न्यूमैटिक की कीमत दुगनी है। ऐसे में फैक्ट्रियों में मैकेनिकल और न्यूमैटिक, दोनों प्रेस हैं।

"सस्ते के ही फेर में ऑपरेटर की जगह हैल्पर को पावर प्रेस पर लगाना। प्रेस में सस्ते पार्ट्स लगाना : बुश 200 रुपये की जगह 130 रुपये वाला; रोलिंग 60 रुपये किलो वाले ई एन 24 की जगह 32 रुपये किलो वाले एम एस की; स्प्रिंग 100 रुपये वाले की जगह 25 रुपये का; मशीन में तेल तक नहीं डालना – खर्च घटाने के लिये तेल-ग्रीस रखना ही नहीं; ... हाथ काटने के प्रबन्ध हैं यह।

"ज्यादा उत्पादन के चक्कर में मोटर की पुली बढा कर पावर प्रेस के स्ट्रोक बढा देना एक्सीडेन्ट बढाना लिये है। अधिक उत्पादन निर्धारित करना अथवा इनसेन्टिव का लालच देना या फिर कुछ सुस्ताने के चक्कर में पैडल दबा कर लगातार स्ट्रोक लगाना... बीच-बीच में मशीन को रोक कर जाँच नहीं करना एक्सीडेन्ट बढाना लिये है।

"50 टन की प्रेस खाली नहीं है तो 30 टन वाली पर काम करवाना। तीस टन वाली पर 50 टन का लोड दे देते हैं – ज्यादा लोड की वजह से रोलिंग चाबी मुड़ जाती है। रोलिंग चाबी मुड़ने-कटने पर नई लगाने की बजाय वैल्डिंग करके लगा देते हैं – 100 रुपये की जगह 5 रुपये में काम निकालना। रोलिंग चाबी खराब होने से प्रेस डबल आ जाती है और हाथ कट जाता है। प्रेस के पैडल में लगी स्प्रिंग ढीली होने पर 70-80 रुपये बचाने के चक्कर में स्प्रिंग बदलते नहीं। पैडल स्प्रिंग ढीली होने से लैच हुक (स्टोपर) काम नहीं करता तब प्रेस डबल आ जाती है और हाथ कट जाता है। लिमिट स्विच फेल होने पर न्यूमैटिक प्रेस डबल आ जाती है और हाथ कट जाता है....

"पावर प्रेसों से हाथ कटने का मुख्य कारण खर्च बचाना है, अधिक व सस्ते में उत्पादन करवाना है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।